Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 01, April 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org

भूण्डा महायज्ञ में संगीत

VIKAS KUMAR

Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla

सार संक्षेपिका

संगीत कला आदिकाल से प्रचलित एक लोकप्रिय विधा है। इसे केवल कुछ शब्दों में व्यक्त करना अत्यन्त कठिन कार्य है। संगीत का जन्म मानव सभ्यता के साथ हुआ। हिमाचल अनेक ऋषि–मुनियों की तपोभूमि रही है, इसलिए इसे 'देवभूमि' के नाम से भी जाना जाता है। इसी देवभूमि के रामपुर तथा रोहडु क्षेत्र में 'भूण्डा महायज्ञ' का आयोजन किया जाता है। 'भूण्डा महायज्ञ' भगवान परशुराम जी से संबन्धित है। सहस्त्रबाहु नामक एक शासक ने परशुराम के पिता की हत्या करवा दी थी। परशुराम को यह बात पता चलनें पर उन्होंने अपने शत्रुओं को मिटाने के लिए यज्ञ किया था, जिसमें उन्होंने शत्रुओं के सिरों की आहुतियां दी थी। इसी प्रथा का वर्तमान स्वरूप आज भूण्डा महायज्ञ है। यह महायज्ञ प्रति 12 वर्ष के पष्चात् यजुर्वेद के विधान से होता है। इसमें विषेष विधान से निर्मित विषेष घास (बग्गड़) के रस्से पर एक व्यक्ति को ऊपर से नीचे की ओर छोड़ दिया जाता है। जब 'ज्याली' रस्से के दूसरे सिरे पर सुरक्षित पहुंच जाता है, तो उसे मन्दिर ले जाकर उसकी मुंह मांगी मुराद व धन–धान्य से सम्पन्न किया जाता हैं। भूण्डा महायज्ञ का सांगीतिक पक्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है। भूण्डा महायज्ञ में जब ज्याली को रस्से से उतरने के लिए तैयार किया जाता है तो उस समय जिस विधि से ज्याली को तैयार किया जाता है उसी के अनुसार गीत गाए जाते है। रस्से पर चढ़ाते समय भी गीत गाए जाते है। महायज्ञ के कुण्ड बनाते समय भी विधिपूर्वक गायन के साथ ही कुण्ड तैयार किए जाते है। इस प्रकार सफलतापूर्वक रस्सा पार करने के बाद वातावरण पूर्णत संगीतमय हो जाता है। लोग ढोल नगाढ़ों के साथ नाटी नृत्य करते है तथा सारे लोग खुषी से गायन, वादन तथा नृत्य में डूब जाते है।

बीज शब्दः ज्याली, महायज्ञ, भूण्डा

भूमिका

संगीत ध्वनि तथा शब्दों से जुड़ी एक कला है। अतः इसका संप्रेषण अन्य कलाओं की अपेक्षा अधिक व्यापक तथा विस्तृत है। संगीत मनुष्य के जन्म के साथ शुरु होता है तथा मृत्यु तक साथ रहता है। मनुष्य की अन्तिम यात्रा तक मनुष्य संगीत के साथ ही रहता है। मनुष्य की सभ्यता तथा संस्कृति संगीत से ही जुड़ी है।

महायज्ञ का अर्थ

''धर्मशास्त्र के अनुसार नित्य किए जाने वाले पांच कर्म, मनुष्य कर्म,जिनसे नित्य के पापों का नाश हो जाता है। ये कर्म इस प्रकार है (क) ब्रह्म यज्ञ–संध्योपासन (ख) देवयज्ञ–हवन (ग) पितृयज्ञ–तर्पण (घ) भूतयज्ञ–बलि (ड़) नृयज्ञ–अतिथि सत्कार।'' इस प्रकार उपर लिखित सभी यज्ञ महायज्ञ में किए जाते है। महायज्ञ में नित्य पूजा पाठ का कार्य भी किया जाता है। महायज्ञ कई वर्षों व कई महीनों तक चलता है। ''संस्कृत शब्दार्थ 'कौस्तुभ' के अनुसार महायज्ञ का अर्थ महान पूजन है। महा–महान तथा यज्ञ–पूजन।''[1]

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 01, April 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org

भूण्डा शब्द का अर्थ व नामकरण

''वैदिक युगीन अजमेघ, अश्वमेघ, गौमेघ तथा नरमेघ जैसे यज्ञों से भूण्डा नामक यज्ञ इस प्रदेश का अत्यन्त महत्वपूर्ण उत्सव अनुष्ठान रहा हैं विद्वानों का विचार है कि भूण्डा शब्द बेड़ा से निकला है। भूण्डा के अवसर पर भेड़ की बलि दी जाती है। चूंकि 'बेड़े' का भूण्डे से अत्याधिक सम्बन्ध है। अतः संभवत् भूण्डा बेड़ा शब्द का ही अपभ्रंश रुप हो।''[1]

लोक मान्यताओं के अनुसार सिर को स्थानीय भाषा में मुंड कहते है इसी प्रकार मुंड से मुंडा तथा इसी का अपभ्रंश रुप भूंण्डा है जो वर्तमान में प्रचलित है तथा आज हिमाचल के विभिन्न स्थानों में इस महायज्ञ को 'भूण्डा महायज्ञ' के नाम से ही जाना जाता है।

भूण्डा महायज्ञ का सम्बन्ध परशुराम से है। भगवान परशुराम रेणुका माता व ऋषि जमदग्नि के पुत्र थे। ऐसा माना जाता है कि भगवान परशुराम स्वभाव के अत्यन्त क्रोधी व घुमक्कड़ थे। परशुराम जी के यौवन काल में ऐसी घटना घटी जिसने उनके स्वभाव को और भी ज्यादा उग्र बना दिया। परशुराम के पिता ऋषि जमदग्नि के आश्रम में कामधेनु गाय थी तथा सहस्त्रबाहु नामक एक निरंकुश शासक उन दिनों उतरी भारत में राज्य करता था।

एक दिन राजा सहस्त्रबाहु शिकार खेलने उन्ही वनों में जा पंहुचा जहां ऋषि जमदग्नि का आश्रम था। ऋषि ने राजा को भोजन के लिए आमन्त्रित किया। राजा ने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। राजा और उसके सैनिकों ने मनमाने सुस्वाद व्यंजनों को जी भर खाया तथा ऋषि के आतिथ्य की प्रशंसा की। राजा एक निरंकुश प्रकृति का शासक था। उसने अपने सैनिकों को आदेश देकर स बात का पता लगाने को कहा कि ऋषि ने इतने लोगों को मनचाहे भोजन व आतिथ्य का प्रबंध कहां से किया। जब सैनिको ने इस बात का पता लगाया तो उन्हे ज्ञात हुआ कि वा सब 'कामधेनु' गाय का चमत्कार था। राजा ऋषि से कामधेनु गाय की मांग करता है, ऋषि गाय को देने से साफ इन्कार कर देता है। इससे राजा अपने सैनिकों से ऋषि की हत्या करवा देता है। परशुराम के लौटने पर माता रेणुका पूरा घटनाक्रम बताती है। परशुराम अपने मन में क्षत्रियों को खत्म करने का ठान लेते है।

परशुराम जी ने अस्त्र शस्त्र को प्राप्त करने के लिए शक्ति की आराधना की तथा देवी को प्रसन्न किया। यह आराधना उन्होने अपने पिता के आश्रम से दूर चन्द्रवंशी राजाओं की सीमा के अर्न्तगत सतलुज नदी के किनारे वनों में किया था। ''उन्होने यजुर्वेद में वर्णित विधि विधान के अनुसार नरमेघ महायज्ञ का आयोजन किया। इसके लिए उन्होने पूरे भारत के विभिन्न भागों से चारों वेदों के जानकार ब्राह्मणों को इस नरमेघ महायज्ञ के लिए आमन्त्रित किया। यह महायज्ञ लगभग दो वर्षों तक चला जिसमें क्षत्रियों के सिरों की आहुतियां दी जाती थी।''[1]

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 01, April 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org

परशुराम जी इस महायज्ञ से एक विशाल सेना का निर्माण कर रहे थे ताकि जनता के साथ होने वाले अत्याचार का अन्त हो सकें। बारह वर्ष तक उन्होने अपने सहयोगियों के साथ घूम–घूम कर दुष्ट राजाओं के आतंक को समाप्त किया तथा श्री पटल (निरमण्ड) में आकर यज्ञ समाप्त किया। इस यज्ञ के पश्चात् यहां के स्थानीय लोगों ने हर बारह वर्ष बाद नरमेघ यज्ञ आयोजन करने की एक परम्परा बना दी।

परशुराम द्वारा करवाए गए उस नरमेघ महायज्ञ को लोगों ने भूण्डा महायज्ञ की प्रथा के रुप में आज भी जीवित रखा है। भूण्डा महायज्ञ पौराणिक तथा वैदिक है। कहा जाता है कि भूण्डा महायज्ञ की उत्पति भंडासुर से हुई है और इस महायज्ञ की परम्परा का आरम्भ 'काव' नामक स्थान तहसील करसोग ज़िला मण्डी से हुआ है। ''सबसे पहले भूण्डा महायज्ञ यहीं मनाया गया था। वर्तमान समय में भूण्डा महायज्ञ का आयोजन प्रत्येक बारह वर्ष के बाद किया जाता है। यह महायज्ञ चार दिन का होता है। इस महायज्ञ की तैयारियां एक वर्ष पूर्व प्रारम्भ हो जाती है। इस भूण्डा महायज्ञ में ज्याली या बेड़ा का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। इसी ज्याली को बलि के प्रतीक के रुप में रस्सी पर चढ़ाया जाता हैं यदि रस्से से गिरकर ज्याली की मौत हो जाए तो सम्पूर्ण महायज्ञ निष्फल माना जाता है तथा दूसरे भूण्डे का आयोजन करना पड़ता है।''[1]

इस महायज्ञ में नरबलि नही होती केवल नर का सांकेतिक बलिदान होता है जिससे यज्ञ विधान भी पूरा हो जाए तथा सामान्य जनता भी संतुष्ट हो जाए। भूण्डा महायज्ञ परम्परा का संगीत पक्ष भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस महायज्ञ से सम्बन्धित सभी देवी–देवताओं को निमन्त्रण दिया जाता है। प्रथम दिन देवी देवताओं का पारम्परिक वाद्य यन्त्रों के साथ स्वागत किया जाता है। भूण्डा महायज्ञ को जल यात्रा का बहुत महत्व है क्योंकि यही वह मंगल जल होता है जिससे महायज्ञ में पूजा की जाती है। जल यात्रा बाजों–गाजों के साथ चलती है। इस महायज्ञ के आचार्य मन्त्रोच्चारण के साथ चलते है।

भूण्डा महायज्ञ में देवी देवताओं को निमंत्रित करने को निमन्त्रण गीत गाया जाता है। जो इस प्रकार है–

''आऔ पहलो बंधवणों, पहलौ बंधावणों कावे स्थाने........

आई बोलो कालके केरी बारी भेले ....जी,

पहने गै कालके, पाट पटोड़ौ, दैए साजन

चौड़ो सिरे पहने रातड़े डोरे भलै।''[1]

भूण्डा महायज्ञ में लोक संगीत व लोक तालों का विशेष महत्व है। जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कारों में विभिन्न प्रकार के लोक संगीत व लोक तालों का प्रयोग किया जाता है। भूण्डा महायज्ञ के प्रत्येक प्रायोजन में

लोक गायन व लोक तालों की संगत की जाती है। लोक गायन व वाद्य वादन सुनते ही लोगों के हाथ पैर स्वतः ही हिलने लग जाते है। भूण्डा महायज्ञ जब सफल होता है तो लोग अपनी खुशी व्यक्त करने के लिए नाचते गाते है तो उस समय पर गाए जाने वाले कुछ लोकगीतों का वर्णन इस प्रकार है।

प्रस्तुत गीत में देवी–देवताओं को निमन्त्रण दिया जाता है। इस निमन्त्रण गीत में परशुराम जी द्वारा बसाई गई बस्तियां जो कि 'चार ठहरी पांच स्थान' के नाम से जानी जाती है के देवी देवताओं को सर्वप्रथम निमन्त्रण दिया जाता हैं।

स्थापना गीत

जापु तापु सा स्थापना, कुणी देवी स्थापना

आं जी कुणी देवे स्थापना कराएं आं............जी

इस गीत में 'भूण्डा महायज्ञ' में निमन्त्रित देवी–देवताओं का स्वागत करने के पशचात् उनको यथोचित स्थान पर स्थापित करने का वर्णन किया गया है।

काली माता की स्थापना का गीत

बीयान्दड़े लियाये माई मंगलो तेरो नाउ

भेदे रांचिए रांचिए चारों गरांओं

इस गीत में काली माता की स्तुति की गई है तथा कहा गया है कि काली माता सुबहा शाम तेरी पूजा की जाती है। चारों दिशाओं में तेरा ही नाम है तू सबके कष्टों को हरने वाली है।

जल यात्रा का गीत

मने मेरे लागों आं, मने तीर्थों का भाव

परसते चाली हामे तेरे बंधावे आं

यह गीत जल यात्रा के समय गाया जाता है।

रस्से पर जाने का गीत

रे मना लोभिया गबना, गबना भद्रि को लीजे

गबना भद्रि को लीजे, धर्मों करीजे तु सुणे संदर स्वामी मेरा

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 01, April 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org

यह गीत भूण्डा महायज्ञ में ज्याली के रस्से पर जाने से पूर्व गाया जाता है। इसमें ज्याली की पत्नी का वर्णन है। इस गीत में कहा गया है कि ज्याली तू रस्सी पर गिर के वापिस अअने पर बधाईयों का वर्णन है।

शोध प्रविधि

उदेश्य

शोध कार्य को सफल बनाने की कुंजी उसके निर्धारित लक्ष्य एंव उदेष्य पर आधारित है। षोध कार्य की योजना में क्रमबद्धता सिर्फ उदेष्य के निर्धारण से ही संभव हो सकती है। इस शोध कार्य का उदेष्य लोगो को भूण्डा महायज्ञ की सांगीतिक संस्कृति से अवगत कराना है। महायज्ञ क्रम को किस तरह से गीतों के साथ जोड़ा गया है तथा संगीत का महायज्ञ में कितना महत्वपूर्ण स्थान है इस सांगीतिक प्रथा को जीवन्त रखने का प्रयास इस शोध कार्य के द्वारा जाएगा।

शोध क्षेत्र

इस शोध कार्य का क्षेत्र शिमला जनपद का वह भाग है जहां भूण्डा महायज्ञ की परम्परा का निर्वहन किया जाता है।

शोध विधि

इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए साक्षात्कार द्वारा सामग्री एकत्र की गई तथा गाए जाने वाले गीतों का संग्रह किया गया। तत्पश्चात् पुस्तकों की सहायता से शोध कार्य को अन्तिम रुप दिया गया।

निष्कर्ष

शिमला जनपद में अनेक लोक परम्पराएं तथा उत्सव प्रचलित है जो शिमला जनपद की लोक संस्कृति की पहचान है। इन्ही लोक परम्पराओं में भूण्डा महायज्ञ पूर्णत सांगीतिक परम्परा है। भूण्डा महायज्ञ में विविध वाद्य यन्त्र व गायन के साथ पूर्ण किया जाता है। इस प्राचीन परम्परा को सुरक्षित एवं संवर्धित करने हेतु शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत विनम्र प्रयास किया गया है ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सके।

सन्दर्भ

मिश्र, शास्त्री लोकनाथ, सतलुज घाटी की सांस्कृतिक पृष्टभूमि, आजाद हिन्द स्टार्ज, एस. सी. ओ. सेक्टर–5 चण्डीगढ़।

शर्मा, नागेन्द्र, हिमालय का उतरांचल रामपुर बुशैहर।

शर्मा, रामप्रसाद, पौराणिक कोष, ज्ञानमण्डल लि., वाराणसी।

साक्षात्कार

बिरमा देवी, गांव लालसा।

कृष्ण लाल शर्मा, गांव लालसा।